

असाधारग

EXTRAORDINARY

भाग II -- खण्ड 3 -- उप-खण्ड (i)

PART II-Section 3-Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं॰ 269]

नई विल्ली, सोमबार, प्रगस्त 20, 1979/भाषण 29, 1901

No. 269]

NEW DELHI, MONDAY, AUGUST 20, 1979/SRAVANA 29, 1901

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या वो जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में एका जा सके ।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

नौबहन एवं परिबहन मन्त्रलय

(परिवहन पक्ष)

ग्रविसचनाएं

नई क्लिमी, 20 ग्रगस्त, 1979

सा० का० नि० 502 (घ). — कलकला पत्तन का न्यासी ग्रंडन (न्यासियों को मुल्क ग्रीर मत्तों की श्रवायगी) मंग्रोधन नियम, 1979 का एक प्रारूप, महायत्तन न्यास श्रिष्टियम, 1963 (1963 का 38) की धारा 122 की उपधारा (2) के ग्रंपेक्षानुसार, भारत सरकार के नौबहन भौर परिवहन मंत्रालय (परिवहन पक्ष) की ग्राध्मुचना सं० सा० का० नि० 399 (घ), नारीख 25 जून, 1979 के ग्रंप्रीन भारत के राजपन्न भाग 2, खण्ड 3 (1), तारीख 25 जून, 1979 के प्रजान के राजपन्न भाग 2, खण्ड 3 (1), तारीख ति दिन की ग्रंप्रीन से उक्त श्रिष्ट्रमान के प्रकाशन की तारीख से पैतालीस दिन की श्रविध की समाप्ति तक उन सभी व्यक्तियों से ग्राप्तियां ग्रीर मुझान मांगे गए थे, जिनके उससे प्रभावित होने की संभावना थी।

ग्रीर उक्त राजपञ्च की प्रतियां 3 जुलाई, 1979 को जनता की उपलब्ध करा दी गयी थी।

ग्रीर जनना से पूर्वोक्त ग्रविध की मनाष्ट्रि के पर्य कोई ग्रापश्चियां/ सुद्धाव प्राप्त नहीं हुए हैं] अतः, अब, केन्द्रीय भरकार उक्त अधिनियम की धारा 122 की उपश्चारा (1) के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, निम्मलिखित नियम बनाली है, श्रथित्:—

नियम

- (1) इन निवमों का नाम कलकत्ता पत्तन को न्यासी मंडल (न्यासिकों की शृल्क श्रीर भक्तों की अदायगी) संशोधन नियम, 1979 है।
- (2) ये राजपन्न में प्रकाशित होते को तारीख को प्रवृक्त होंग । 2 कलकत्ता पत्तम का न्यासीमंडल (न्जासियों को गुरुक भीर भत्तों की श्रदायगी) नियम, 1975 में, नियम 4 के बाद, निकालिखित निवम रखा जाएगा, अर्थात्—

"5, जो न्यामी संतद भवस्य हो या राज्य विधान सभा का सवस्य हो, उसे कुछ भक्तों की ग्रवायरी करना:—

नियम 2 प्रौर 3 में मुख भी कहे जाने के बावजूद कोई भी त्वासी जो संसद ग्रयवा राज्य विधायका का भी सदस्य हो, संसद (निर्देहन निवारण) श्रिष्टिनियम, 1959 (1959 को 10) की धारा 2 के खण्ड (क) में यथापरिभाविन प्रतिपूरक भने को छोड़कर, जैसी भी स्थिति हो, ग्रन्य किसी भी शृहक का हकदार नहीं होगा, या उन भनों को छोड़कर, यदि कोई हों तो, जिन्हें राज्य विधायका का सदस्य इस प्रकार की निर्देहना के बिसा राज्य विधायिका की सदस्यना के लिए निर्वहतः निवारण के संबंध में राज्य में उस समय लागू किसी भी कानून के धधीन प्राप्त करता हो, भ्रत्य किसी भी गुल्क का हकदार नहीं होगा।

सिं० पी ० जी० एल० · 17/79]

MINISTRY OF SHIPPING AND TRANSPORT

(Transport Wing) NOTIFICATIONS

New Delhi, the 20th August, 1979

G.S.R. 502 (E).—Whereas the draft of the Board of Trustees of the Port of Calcutta (Payment of Fees and Allowances to Trustees) Amendment Rules, 1979, was published as required by sub-section (2) of Section 122 of the Major Por Trusts Act, 1963 (38 of 1963) at page 869-70 of the Gazette of India, Extraordinary, Part II, Section 3 (i), dated the 25th June, 1979, under the notification of the Government of India in the Ministry of Shipping and Transport (Transport Wing) No. G.S.R. 399 (E), dated the 25th June, 1979, inviting objections and suggestions from all persons likely to be affected thereby till the expiry of a period of forty-five days from the date of publication of the said notification in the Official Gazette.

And Whereas the copies of the said Gazette were made available to the public on the 3rd July, 1979;

And Whereas no objections and suggestions have been received from the public before the expiry of the period afore said:

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of Section 122 of the said Act, the Central Government hereby make the following rules, namely:—

- 1. (1) These rules may be called the Board of Trustees of the Port of Calcutta (Payment of Fees and Allowances to Trustees) Amendment Rules, 1979.
- (2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.
- 2. In the Board of Trustees of the Port of Calcutta (Payment of Fees and Allowances to Trustees) Rules, 1975, after rule 4, the following rule shall be inserted, namely:—
- "5. Payment of certain allowances to a Trustee who is a member of Parliament or of the Legislature of a State.—Notwithstanding anything contained in rules 2 and 3, a Trustee who is also a Member of Parliament or of the Legislature of a State, shall not be entitled to any fees other than the compensatory allowance as defined in clause (a) of Section 2 of the Parliament (Prevention of Disqualification) Act, 1959 (10 of 1959) or, as the case may be, other than the allowances, if any, which a member of the Legislature of the State may, under any law for the time being in force in the State relating to the prevention of disqualification for membership of the State Legislature, receive without incurring such disqualification."

[F. No. PGL-17/79]

सा० का० नि० 503 (म) — बम्बई पत्तन का न्यासी मंडल (न्यासियों को मुल्क भीर भत्तों की भवायगी) संगोधन नियम, 1979 का एक प्रारूप, महापत्तन न्यास अधिनयम, 1963 (1963 का 38) की धारा 122 की उपधारा (2) के प्रपेक्षानुमार, भारत सरकार के मौबहुन भीर परिवहन मंत्रालय (परिवहन पक्ष) की अधिसूचना सं० सा० का० नि० 400 (भ), तारीख 25 जून, 1979 के मधीन भारत के राजपत भग 2, दण्ड (3) (1), तारीख 25 जून, 1979 के मुखीन भारत

870 पर प्रकाशित किया गया या, जिसमें राजपत्त में उक्त शिक्षमचना के प्रकाशन की नारीख से पैतालीम विन की श्रविध की समाप्ति तक उन सभी व्यक्तियों से शापत्तिया श्रीर सुधाव मिंग गए थे, जिनके उससे प्रका-वित होने की संभावना थी।

भौर उक्त राजपक की प्रसियां 3 जुलाई, 1979 को जनता को उप-जब्घ करा दी गयी थीं।

भीर जनता में पूर्वोक्त ग्रबंध की समाप्ति के पूर्व कोई भाषतियां/ समाज प्राप्त नहीं हुए हैं।

भतः भवः केन्द्रीय सरकार, उक्त भ्रधिनियम की धारा 122 की उप धारा (1) के द्वारा प्रवत्त शक्तिओं का ग्रयोग करते हुए, निम्नलिखित नियम बनाती है, भ्रधीतु:---

नियम

- । (1) इस नियमों का नाम लम्बई पत्तन का न्यासी मंडल (न्य सियों को शतक और भत्तों की भ्रदायगी) संशोधन नियम, 1979 है।
- (2) ये राजपत्न में प्रकाशित ोने की तारीख को प्रवृत्त होंगे । 2 अभ्वर्ष पत्तन का न्यासी मंडल (न्यासियों को शुल्क और भत्तों की ग्रवायगी) नियम, 1975 में, नियम 243 के बाद, निम्नलिखित नियम रक्षा जाएगा, ग्रवित् —
- 5. जो न्यासी संसद सदस्य हो या राज्य विधान सभा का सदस्य हो, उसे कुछ भत्तों की ग्रवायगी करना:—

नियम 2 भीर 3 में कुछ भी कहे जाने के बावजूब कोई भी न्यासी जो संसद प्रथ्वा राज्य विद्यायिका का भी सदस्य हो संसद (निर्न्हता निवारण) भ्रधिनियम, 1959 (1959 का 10) की घारा 2 के खण्ड (क) में यथापरिसाधित प्रतिपुरक मने को छोड़कर, जैसी भी स्थिति हो, भ्रन्य किसी भी शुरूक का हकदार नहीं होगा, या उन भक्तों को छोड़कर, यदि कोई हों हो, जिन्हें राज्य विधायिका का सदस्य इस प्रकार की निर्नेहता के बिना राज्य विधायिका की सदस्यता के लिए निर्रहता निवारण के संबंध में राज्य में उस समय लागू किसी भी कानून के भ्रधीन प्राप्त करना हो, भ्रन्य किसी भी शुरूक का हकदार नहीं होगा।"

[सं० पी० जी० एल०-17/79]

G.S.R 503 (E).—Whereas the draft of the Board of Trustees of the Port of Bombay (Payment of Fees and Allowances to Trustees) Amendment Rules, 1979, was published as required by sub-section (2) of Section 122 of the Major Port Trusts Act, 1963 (38 of 1963) at page 870 of the Gazette of India, Extraordinary, Part II, Section 3(i), dated the 25th June, 1979, under the notification of the Government of India in the Ministry of Shipping and Transport (Transport Wing) No. G.S.R. 400 (E), dated the 25th June, 1979, inviting objections and suggestions from all persons likely to be affected thereby till the expiry of a period of forty-five days from the date of publication of the said notification in the Official Gazette;

And whereas the copies of the said Gazette were made available to the public on the 3rd July, 1979:

And whereas no objections and suggestions have been received from the public before the expiry of the period aforesaid;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of Section 122 of the said Act, the Central Government hereby make the following rules, namely:—

1. (1) These rules may be called the Board of Trustees of the Port of Bomhay (Payment of Fees and Allowances to Trustees) Amendment Rules, 1979.

- (2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.
- 2. In the Board of Trustees of the Port of Bombay (Payment of Fees and Allowances to Trustees) Rules, 1975, after rule 4, the following rule shall be inserted, namely:—
- "5. Payment of certain allowances to a Trustee who is a member of Parliament or of the Legislature of a State.—
 Not withstanding anything contained in rules 2 and 3, a Trustee who is also a Member of Parliament or of the Legislature of a State, shall not be entitled to any fees other than the compensatory allowance as defined in clause (a) of Section 2 of the Parliament (Prevention of Disqualification) Act, 1959 (10 of 1959) or, as the case may be, other than the allowance, if any, which a member of the Legislature of the State may, under any law for the time being in force in the State relating to the prevention of disqualification for membership of the State Legislature, receive without incurring such disqualification."

[F. No. PGL-17/79]

सा॰ का० ति० 504 (च).—सवास पत्तन का त्यासी मंडल (त्यासियों को मुल्क ग्रीर भत्तों की ग्रवायगी) संगोधन नियम, 1979 का एक प्रारूप, महापत्तन न्यान प्राधिनियम, 1963 (1963 का 38 की धारा 122 की उपधारा (2) के ग्रपेक्षानुसार, भारत सरकार के नौवहन ग्रीर परि- वहन मंद्वालय (परिवहन पक्ष की ग्रधिमूचना सं० सा० का० नि० 401 (ग्र), तारीख 25 जून, 1979 के ग्रधीन भारत के राजपत्र भाग 2, खण्ड 3 (1), तारीख 25 जून, 1979 के पृष्ठ 871 पर प्रकाणित किया गरा था, जिस में राजपत्र में उक्त ग्राधिमूचना के प्रकाशन की तारीज से पैतालीस दिन की ग्रवधि की समाप्ति तक उन सभी व्यक्तियों से ग्रापित्या ग्रीर सम्राव मार्ग गए थे, जिनके उससे प्रधावित होने की संभावना थी।

श्रीर उक्त राजपन्न की प्रतियां 3 जुलाई, 1979 को जनता की उपलब्ध करा टी गयी थी।

भीर जनता से पूर्वोक्त भवधि की समाप्ति के पूर्व कोई भापत्तियां/ सक्षाब प्राप्त नहीं हुए हैं।

द्यतः ग्रम, केन्द्रीय सरकार, उक्त मिधिनयम की धारा 122 की उप धारा (1) के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, निम्निखित नियम बनाती है, प्रथति:—-

भियम

- (1) इन नियमों का नाम मद्रास पत्तन का न्यामी मंडल (न्यामियों को सुरूक ग्रीर भर्ता की ग्रदायनी) संशोधन, नियम, 1979 है।
 - (2) ये राजपक्ष में प्रकाशित होने की नारीख को प्रवृक्त होंगे।
- 2. मद्राम पत्तन का न्यासी मंडल (न्यासियां को णुल्क ग्रीर असों की ग्रदायगी) नियम, 1975 में, नियम 2 के बाद, निम्नलिखित नियम एखा जाएगा, ग्रर्थात्: —
- "3. जो न्यासी संसद सदस्य हो या राज्य विधान सभा का सदस्य हो, उसे कुछ भत्तों की ग्रदायगी करना :—

नियम 2 में कुछ भी कहें जाने के बान हर कोई भी न्यासी जो संसद प्रथवा राज्य विधायिका का भी सदस्य हो. समय (निर्हेश निवारण) अधिनियम, 1959 (1959 का 10) की धारा 2 के खण्ड (क) में यथापरिभाषित प्रतिपूर्ण भन्ने को छोड़कर, जैसी भी स्थिति हो, भन्य किसी भी मुल्क का हकदार नहीं होगा, या उन भन्तों को छोड़कर, यदि कोई हों तो, जिन्हें राज्य विधायिका का सदस्य इस अकार की निरंहता के बिसा राज्य विधायिका की सदस्यता के लिए निर्हेहता निवारण के संबंध में राज्य में उस समय लागू किसी भी कानून के प्रधीन प्राप्त करता हो, ग्रन्य किसी भी मुल्क का हकदार नहीं होगा।"

[सं० पी० जी० एल०-1*7/79*]

G.S.R. 504(E).—Whereas the draft of the Board of Trustees of the Port of Madras (Payment of Fees and Allowances to Trustees) Amendment Rules, 1979, was published as required by sub-section (2) of Section 122 of the Major Port Trusts Act, 1963 (38 of 1963) at page 871 of the Gazette of India, Extraordinary, Part II, Section 3(i), dated the 25th June, 1979, under the notification of the Government of India in the Ministry of Shipping and Transport (Transport Wing) No. G.S.R. 401(E), dated the 25th June, 1979, inviting objections and suggestions from all persons likely to be affected thereby till the expiry of a period of forty-five days from the date of publication of the said notification in the Official Gazette;

And whereas the copies of the said Gazette were made available to the public on the 3rd July, 1979;

And whereas no objections and suggestions have been received from the public before the expiry of the period aforesaid;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by subsection (1) of Section 122 of the said Act, the Central Government hereby make the following rules, namely:—

- 1. (1) These rules may be called the Board of Trustees of the Port of Madras (Payment of Fees and Allowances to Trustees) Amendment Rules, 1979.
- (2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.
- 2. In the Board of Trustees of the Port of Madras (Payment of Fees and Allowances to Trustees) Rules, 1975 after rule 2, the following rule shall be inserted, namely:—
 - "3. Payment of certain allowances to a Trustee who is a member of Parliament or of the Legislature of a State. Notwithstanding anything contained in rule 2, a Trustee who is also a Member of Parliament or of the Legislature of a State, shall not be entitled to any fees other than the compensatory allowance as defined in clause (a) of Section 2 of the Parliament (Prevention of Disqualification) Act, 1959 (10 of 1959) or, as the case may be, other than the allowances, if any, which a member of the Legislature of the State may, under any law for the time being in force in the State relating to the prevention of disqualification for membership of the State Legislature, receive without incurring such disqualification."

[F. No. PGL-17/79]

सार कार निरु 505(म) :—-नृतोकांदिन पत्तन का त्यासी मंडल (स्यासियों को बुट्क भीर भन्नां को ध्रवायगी) संगोधन नियम, 1979 का एक प्राकृप, महापन्तन त्यास अधिनियम, 1963 (1963 का 38) की धारा 122 की उपधारा (2) के अपेक्षानुसार, भारत सरकार के नौवहन और परिवहन मंत्रालय (परिवहन पक्ष) को अधिमूचना स्राम् कार निरु 402 (म्रा), नारीख 25 जून, 1979 के अधीन भारत के राजपल भाग 2, खण्ड 3 (1), नारीख 25 जून, 1979 के पृष्ठ 871-872 पर प्रकाशित किया गया था, जिसमें राजपल में उक्त अधिमूचना के प्रकाशन की नारीख से पैनालीस विन की अवधि की समाप्ति तक उन सभी व्यक्तियों से आपिनीयों और सुआव मागें गये थे, जिनके उससे प्रभावित होने की संभावना थी।

ग्रीर उक्त राजपन्न को प्रतियां 3 जुलाई, 1979 की जनता की उपलब्ध करा दी गयी थीं।

श्रीर जनता से पूर्विकत श्रविध की समाप्ति के पूर्व कोई श्रापित्तयां/ मुझाब प्राप्त नहीं हुए हैं। म्रतः यदः, केन्द्रीय सरकारः, उक्त म्रिधिनियम की घारा 122 की उपभारा (1) के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, निस्तिविक्त नियम बनाती है, भ्रमात्:---

नियम

- (1) इन नियमों का नाम नूनीकोरिन पणन का न्यामी मंडल (न्यासियों को सुरुक और भलों को खदायगी) संगोधन नियम 1979 है।
 - (2) ये राजपन्न में प्रकाशित होते की तारीख की प्रवृत्त होंगे।
- 2. तूर्तीकोरिन पत्तन का न्यासी मंडल (स्यासियों को गुरुक और भत्तों की ग्रदायरी) नियम, 1979 में, नियम 3 के बाद, नियन-लिखित नियम रखा जायेगा, श्रवात :---

"4 जो न्यासी संसद सदस्य हो या राज्य विवान सभा का सदस्य हो, उसे कुछ भनों की प्रयायगी करना .---

नियम 2 थौर 3 में कुछ भी कहें जान के बावजूद कोई भी स्यासी जो सबद अथवा राज्य विश्वायिका का भी मदस्य हों, मंगद (निरंहता निवारण) अधिनियम, 1959 (1959 का 10) की धारा 2 के खण्ड (क) में सथापरिशायित प्रतिपूरक भन्ने को छाड़कर, जैनी भी स्थिति हों, भ्रन्य किसी भी गुल्क का हकवार नहीं होगा, या उन भन्नों को छोड़कर, यदि काई हो तो, जिन्हों राज्य विधायिका का सबस्य इस प्रकार की निरंहना के बिना राज्य विधायिका को सबस्यका के निये मिरंहता बिनारण के संबंध में राज्य में उस समय लागू किसी भी कानून के सबीन प्राप्त करना हों, अन्य किसी भी गुल्क का हकदार नहां होंगा।"

[स॰ पा॰ जो॰एल०-17/79]

G.S.R. 505(E).—Whereas the draft of the Board of Trustees of the port of Tuticorin (Payment of Fees and Allowances to Trustees) Amendment Rules, 1979, was published as required by sub-section (2) of Section 122 of the Major Port Trusts Act, 1963 (38 of 1963) at pages 871-872 of the Gazette of India, Extraordinary, Part II, Section 3(i), dated the 25th June, 1979, under the notification of the Government of India in the Ministry of Shipping and Transport (Transport Wing) No. G.S.R. 402(E), dated the 25th June, 1979, inviting objections and suggestions from all persons likely to be affected thereby till the expiry of a period of forty-five days from the date of publication of the said notification in the Official Gazette;

And whereas the copies of the said Gazette were made available to the public on the 3rd July, 1979;

And whereas no objections and suggestions have been received from the public before the expiry of the period aforesaid;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by subsection (1) of Section 122 of the said Act, the Central Government hereby make the following rules, namely:—

- 1. (1) These rules may be called the Board of Trustees of the Port of Tuticorin (Payment of Fees and Allowances to Trustees) Antendment Rules, 1979.
- (2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.
- 2. In the Board of Trustees of the Port of Tuticorin (Payment of Fees and Allowances to Trustees) Rules, 1979, after rule 3, the following rule shall be inserted, namely:—
 - "4. Payment of certain allowances to a Trustee who is a member of Parliament or of the Legislature of a State,—Notwithstanding anything contained in rules 2 and 3, a Trustee who is also a Member of Parliament or of the Legislature of a State, shall not be entitled to any fees other than the compensatory allowance as defined in clause (a) of Section 2 of the Parliament (Prevention of Disqualification)

Act, 1959 (10 of 1959) or, as the case may be, other than the allowances, if any, which a member of the I egislature of the State may, under any law for the time being in force in the State relating to the prevention of disqualification for membership of the State Legislature, receive without incurring such disqualification."

[F. No. PGL-17/79]

सांक्कां स्व 506(अ).—मार्म्शाश्च त्यामी मंडल (त्यामियों को मुक्तं और भरतों की श्रवायगी) संगोधन नियम, 1979 का एक प्ररूप, महापरतन स्यास श्रधिनियम, 1963 (1963 का 38) की धारा 122 की उपधारा (2) के अपेक्षानुसार, भारत सरकार के नौबहन और परिवहन मंत्रालय (परिवहन पक्षा) की अधिसूचना संव सांक्कांविक 403(श्व), नारीख 25 जून, 1979 के अधीन भारत के राजपक्ष माग 2, खण्ड 3(1), तारीख 25 जून, 1979 के पृष्ट 872 पर प्रकाणिंग किया गया था, जिसमें राजपत्र में उक्त अधिसूचना के प्रकाणन की तारीख से पैतालांस विन की अविधि की समाप्ति तक उम संभी व्यक्तियों से आपरितयों और सुझाव मागे गए थे, जिनके उमसे पाम उसने प्रभावत होने की संभावना थी।

और उक्त राजपन्न की प्रतियां 3 जुलाई, 1979 को जनता की उपलब्ध करा वी गर्या था ।

्र और जनता से पूर्वोक्त धनिध की समाप्ति के पूर्व कोई ध्रापितयां/ सुधान प्राप्त नहीं हुए हैं।

भ्रतः भ्रवः भ्रवं सरकार, उक्त भ्रधिनियम की धारा 122 की उपधारा (1) के द्वारा प्रदरत गिक्तयो का प्रयोग करते हुए, निम्नलिखित नियम बनाती है, भ्रथीत्:—

नियम

- (1) इन नियमों का नाम मार्मुगाध न्यासी मंडल (त्यासियों को मुल्क और भरतों की श्रदायगी) संशोधन नियम, 1979 है।
 - (2) ये राजपस्न में प्रकाशित होने की तारीख को प्रशृस्त होंगे।
- 2. मार्मुगाध न्यासी मंडल (न्यासियों की शुक्त और भक्तों की भदायगी) नियम, 1964 में, नियम 4 के बाद, निस्नलिखित नियम रखा जाएगा, धर्षातु:---

"5, जो न्यासी संसद सदस्य हो या राज्य विधान सभा का सदस्य हो, उसे कुछ भरतों की प्रवायनी करना —

नियम 3 और 4 में फुछ भी कहे जाने के बावजूद कोई भी न्यामी जो संसद अधवा राज्य विधायका का भी सदस्य हो, संसद (निरंहता निवारण), अधिनियम, 1959 (1959 का 10) की धारा 2 के खण्ड (क) में यथापरिभाषित प्रतिपूरक भक्ते की छोड़कर, जैसी भी स्थित हो, अन्य किसी भी शुरूक का हकदार नहीं होगा, या उन भक्तों की छोड़कर, यवि कौई हों तो, जिन्हें राज्य विधायका का सदस्य इस प्रकार की निर्देहता के बिना राज्य विधायका की सदस्यता के लिए निरंहता निवारण के संबंध में राज्य में उस समय लागू किसी भी कानून के अधीन प्राप्त करता हो, अन्य किसी भी शुरूक का हकदार नहीं होगा।"

[सं० पो०र्जा०एल०-17/79]

G.S.R. 506 (E):—Whereas the draft of the Mormugao Port Trust (Payment of Fees and Allowances to Trustees, Amendment Rules, 1979, was published as required by subsection (2) of Section 122 of the Major Port Trusts Act, 1963 (38 of 1963) at page 872 of the Gazette of India, Extraordinary, Part II, Section 3(i), dated the 25th June, 1979, under the notification of the Government of India in the Ministry of Shipping and Transport (Transport Wing) No. G.S.R. 403 (E), dated the 25th June, 1979, inviting objections and suggestions from all persons likely to be affected thereby till the expiry of a period of forty-five days from the date of publication of the said notification in the Official Gazette;

And whereas the copies of the said Gazette were made vailable to the public on the 3rd July, 1979;

And whereas no objections and suggestions have been eccived from the public before the expiry of the period foresaid;

Now, therefore, in expercise of the powers conferred by sub-section (1) of Section 122 of the said Act, the Central Bovernment hereby make of the following rules, namely:—

- 1, (1) These rules may be called the Mormugao Port Trust Payment of Fees and Allowances to Trustees) Amendment Rules, 1979.
- (2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.
- 2. In the Mormugao Port Trust (Payment of Fees and Allowances to Trustees) Rules, 1964, after rule 4, the following rule shall be inserted, namely:—
 - "5. Payment of certain allowances to a Trustee who is a member of Parliament or of the Legislature of a State.—Notwithstanding anything contained in rules 3 and 4, a Trustee who is also a Member of Parliament or of the Legislature of a State, shall not be entitled to any fees other than the compensatory allowance as defined in clause (a) of Section 2 of the Parliament (Prevention of Disqualification) Act, 1959 (10 of 1959) or, as the case may be, other than the allowances, if any, which a member of the Legislature of the State may, under any law for the time being in force in the State relating to the prevention of disqualification for membership of the State Legislature, receive without incurring such disqualification."

[F. No. PGL-17/79]

सारुबालिक 507(घ):—पारावीप न्यामी मंडल (न्याबियों को णुहक और भरतों की श्रवायगी) संबोधन नियम, 1979 का एक प्रारूप, महापरतन न्यास घिष्ठियम, 1963 (1963 का 38) की घारा 122 की उपधारा (2) के प्रवेक्षानुसार, भारत सरकार के नौबहन और परिषहन मंत्रालय (परिवहन पक्ष) की प्रधिसूचना संद सावकार्जन 404, तारीख 25 जून, 1979 के प्रधीन भारत के राजपत्र भाग 2, खण्ड 3(1), तारीख 25 जून, 1979 के पृष्ठ 872-873 पर प्रकाशित किया गया था, जिसमें राजपत्र में उक्त प्रधिसूचना के प्रकाशन की तारीख से पैतालीस विन की धविष्ठ की समाप्ति तक उन उभी व्यक्तियों से प्रापरित्यों और सुझाव-मांगे गए थे, जिनक उससे प्रथावित होने की संभावना थी।

और उन्त राजपक्ष की प्रसियां 3 जुलाई, 1979 को जनना की उपलब्ध करा वी गर्यी थीं।

और जनता से पूर्वोक्त श्रंबधि की समाप्ति से पूर्व कोई भापत्नियां/ मुझाव प्राप्त नहीं हुए हैं।

द्यतः श्रव, केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियमकी आरा 122 की उपधारा (1) के वृतारा प्रवस्त वाक्तियों का प्रयोग करते हुए, निम्नलिखिन नियम बनाती है, प्रयात्:—

नियम

- 1. (1) इन निवमों का नाम पाराईपाप न्यासी मंडल (न्यासियों की शुक्क और भरतों की श्रदायनी) संशोधन नियम, 1979 है।
 - (2) ये राजपन्न में प्रकाशित होने की तारी व को प्रवृत्त होंगे।

- 2. पारावीय न्यामी मंडल (न्यामियों को शुक्क और भरतों की श्रयायगी) नियम, 1967 में, नियम 3 के बाद, निम्निखित नियम रखा जाएगा, सर्जात:—
- "4. जो न्यासी संसद मदस्य हो वा राज्य विधान सभा का नवस्य हो, उसे कुछ भरतों की भवायगी करना:—

नियम 2 और 3 में कुछ भी कहे जाने के बावगृद कोई भी त्यांसी जो संसद प्रथवा राज्य विधायिका का भी सदस्य हो, संसद (निरंहता निवारण) प्रधिनियम, 1959 (1959 का 10) की धारा 2 के खण्ड (क) में यथापरिभाषित प्रतिपूरक फत्ते को छोड़कर, जैसी भी स्थिति हो, प्रत्य किसी भी णुल्क का हकदार नहीं होगा, या उन भत्नों को छोड़कर यदि कोई हों तो, जिन्हें राज्य विधायिका का सदस्य इस प्रकार की निरंहता के बिना राज्य विधायिका की सदस्यता के निए निरंहता निवारण के संबंध में राज्य में उस समय लागू किसी भी कानून के भ्रधीन प्राप्त करता हो, अस्य किसी भी मुल्क का हकदार नहीं होगा।"

[सं० पी०जी०एम०-17/79]

G.S.R. 507 (E):—Whereas the draft of the Paradip Port-Trust, (Payment of Fees and Allowances to Trustees) Amendment Rules, 1979, was published as required by sub-section (2) of Section 122 of the Major Port Trusts, Act, 1963 (38 of 1963) at page 872-73 of the Gazette of India, Extraordinary, Part II, Section 3(i), dated the 25th June, 1979, under the notification of the Government of India in the Ministry of Shipping and Trasnsport (Transport Wing) No. G. S. R. 404 (E), dated the 25th June, 1979, inviting objections and suggestions from all persons likely to be affected thereby till the expiry of a period of forty-five days from the date of publication of the said notification in the Official Gazette;

And whereas the copies of the said Gazette were made available to the public on the 3rd July, 1979;

And whereas no objections and suggestions have been received from the public before the expiry of the period aforesaid;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of Section 122 of the said Act, the Central Government hereby makes the following rules, namely:—

- 1. (1) These rules may be called the Paradip Port Trust (Payment of Fees and Allowances to Trustees) Amendment Rules, 1979.
- (2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.
- 2. In the Paradip Port Trust (Payment of Fees and Allowances to Trustees) Rules, 1967 after rule 3, the following rule shall be inserted, namely:—
 - "4. Payment of certain allowances to a Trustee who is a member of Parliament or of the Legislature of a State.—Notwithstanding anything contained in rules 2 and 3, a Trustee who is also a Member of Parliament or of the Legislature of a State, shall not be entitled to any fees other than the compensatory allowances as defined in clause (a) of Section 2 of the Parliament (Prevention of Disqualification) Act, 1959 (10 of 1959) or, as the case may be, other than the allowances, if any, which a member of the Legislature of the State may, under any law for the time being inforce in the State relating to the prevention of disqualification for membership of the State Legislature, receive without incurring such disqualification."

[F. No. PGL-17/79].

साक्काविक 508(म्र):— महापत्तन त्याम (त्यामियों की शुस्क श्रीर भनों की श्रदायगी) संगोधन नियम, 1979 का एक श्रारूप, महापत्तन त्याम ग्रिक्षित्यम, 1963 (1963 का 38) की धारा 122 की उपधारा (2) के अपेक्षानुसार, भारत सरकार के नौबहन और परिवहन मंत्रालय (परिवहन पक्ष) की अधिसूचना संव मावकाविक 405 (ग्र), तारीख 25 जून, 1979 के अधीन भारत के राजपत्र भाग 2, खण्ड 3(i), सारीख 25 जून, 1979 के पृष्ठ 873 पर प्रकाशित किया गया था, जिसमें राजपत्र में उक्त अधिसूचना के प्रकाशन की नारीख से पैतालीस विन की श्रवधि की समाप्ति तक उन सभी व्यक्तियों से आपित्यां भीर संकाब मांगे गये थे, जिनके उससे प्रभावित होने की संभावना थी।

भीर उक्त राजपन्न की प्रतियां 3 जुलाई, 1979 को जनता को उपलब्ध करा दी गयी वीं।

भीर जनता से पूर्वोक्त, भवधि की समाप्ति के पूर्व कोई भापतियां / सुझाव प्राश्त नहीं हुए हैं।

भतः ग्रम, केन्द्रीय सरकार, उक्त प्रधिनियम की झारा 122 की जन्मारा (i) के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, निम्नलिखित नियम बनाती है, भर्योत:—

नियम

- (1) इन नियमों का नाम महापत्तन न्यास (न्यासियों को शुक्क गौर भत्तों की ग्रदायगी) संशोधन नियम, 1979 है।
- (2) ये राजपल में प्रकाशित होने की तारीख की प्रवृत्त होंगे।
 2. महापत्तन न्यास (न्यासियों को शुल्क और भत्तों की धवायनी)
 नियम, 1964 में, नियम 4 के बाब, निम्नलिखित नियम रखा जायेगा,
 चर्चात्

"5. जो न्यासी संसद सदस्य हो या राज्य विद्यान सभा का सदस्य हो, उसे कुछ भक्तों को घवायगी करना :---

नियम 3 धौर 4 में कुछ भी कहे जाने के वावजूद कोई मी स्याची जो संसद धयना राज्य विधायिका का भी नवस्य हो, संसद (निरंहता निवारक) प्रधितियम, 1959 (1959 का 10) की धारा 2 के खण्ड (क) में यद्यापरिभायित प्रतिपूरक भत्ते को छोड़कर, जैसी भी स्थित हो, ध्रम्य किसी भी बुल्क का हकवार नहीं होगा, या उन भत्तों को छोड़कर, यदि कोई हों ती, जिन्हें राज्य विधायिका का सवस्य इस प्रकार की निरंहता के बिना राज्य विधायिका की सवस्यता के लिये निरंहता निवारण के संबंध में राज्य में उस समय लागू किसी भी कानून के प्रधीन प्राप्त करता हो, मन्य किसी भी खुल्क का हकवार नहीं होगा।"

[मं॰ पी॰जी॰एल०-17/79]

G.S.R. 508(E).—Whereas the draft of the Major Port Trusts (Payment of Fees and Allowances to Trustees) Amendment Rules, 1979, was published as required by sub-section (2) of Section 122 of the Major Port Trusts Act, 1963 (38 of 1963) at page 873 of the Gazette of India, Extraordinary, Part II, Section 3(i), dated the 25th June, 1979, under the notification of the Government of India in the Ministry of Shipping and Transport (Transport Wing) No. G.S.R. 405(E), dated the 25th June, 1979, inviting objections and suggestions from all persons likely to be affected thereby till the expire of a period of forty-tive days from the date of publication of the said notification in the Official Gazette;

And whereas the copies of the said Gazette were made available to the public on the 3rd July, 1979;

And whereas no objections and suggestions have been received from the public before the expiry of the period aforesaid;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by subsection (1) of Section 122 of the said Act, the Central Government hereby make the following rules, namely:—

- 1. (1) These rules may be called the Major Port Trusts (Payment of Fees and Allowances to Trustees) Amendment Rules, 1979.
- (2) They shall come into force on the date of their prublication in the Official Gazette.
- 2. In the Major Port Trusts (Payment of Fees and Allowances to Trustees) Rules, 1964, after rule 4, the following rule shall be inserted, namely:—
 - "5 Payment of certain allowances to a Trustee who is a member of Parliament or of the Legislature of a State.— Notwithsanting anything contained in rules 3 and 4, a Trustee who is also a Member of Parliament or of the Legislature of a State, shall not be entitled any fees other than the compensatory allowance as defined in clause (a) of Section 2 of the Parliament (Prevention of Disqualification) Act, 1959 (10 of 1959) or, as the case may be, other than the allowances, if any, which a member of the Legislature of the State may, under any law for the time being in force in the State relating to the prevention of disqualification for membership of the State Legislature, receive without incurring such disqualification."

JF. No. PGL-17/79

स्रा० का० जि० 509(प्र). - महापत्तन न्यांस प्रिष्ठिनियम, 1963 (1963 का 38) की धारा 3 की उपधारा (6) के साथ पठित उसी धारा की उपधारा (i) के खण्ड (ग) के उपखण्ड (1) बारा प्रवस्त प्रिक्तियों का प्रयोग करते एए केन्द्रीय सरकार महास पत्तन के न्यासियों के मण्डल में श्री एम० कल्याणसुन्दरम, संसद सदस्य को न्यासी के रूप में, जो महास पत्तन में कार्यरत श्रीकिंग का प्रितिनिधित्व करते हैं, नियुक्त करती है श्रीर भारत सरकार के नौषहन और परिवहन मंत्रालय (परिवहन पक्ष) की श्रीधसूचना संख्या सा० का० नि० 302(ई), दिनांक 31 मार्ज, 1979 में निम्नालिखित संशोधन करती है, श्रामांत :—

उक्त ब्रधिसूचना में, कम संख्या 17 के बाद निम्नलिखित कम संख्या भौर प्रविच्टि रखी जाए, भर्यात्:---

"18. श्री एम० कल्याणसुन्दरम, संसद सपस्य : पस्तन में कार्यरस श्रमिकों के प्रतिनिधि।"

[फाइस सं॰ पीटीबी-43/78]

G.S.R. 509.—In exercise of the powers conferred by subclause (i) of clause (c) of sub-section (1) of section 3 of the Major Port Trusts Act, 1963 (38 of 1963), read with sub-section (6) of the said section, the Central Government hereby appoint Shri M. Kalyanasundaram, M.P., as trustee, representing the labour employed in the Port of Madras, on the Board of Trustees of the Port of Madras, and makes the following amendment in the notification of the Government of India in the Ministry of Shipping and Transport (Transport Wing) No. G.S.R. 302(E), dated the 31st March, 1979, namely:—

In the said notinization, after Serial Number 17, the following Serial Number and entry shall be inserted, namely:—

"18. Shri M. Kalyanasundaram, M.P.—Representing the laboure employed in the Port."

[F. No. PTB-43/78]

साठ काठ कि 510 (म).—महापल्यन न्यास प्रिप्तियम, 1963 (1963 का 38) की धारा 3 की उपधारा (6) के लाथ पठिन उसी धारा की उपधारा (i) के खण्ड (ग) के उपखण्ड (1) द्वारा प्रदर्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार कोचीन पत्नन के न्यासियों के मण्डल में श्री क्यालार रिव, संसद सबस्य को न्यासी के रूप में, जो कोचीन पत्तन में कार्यरन श्रमिकों का प्रतिनिधित्व करने हैं, नियुक्त करती है ग्रीर भारत सरकार के नौबहन ग्रीर परिवहन मंत्रालय (परिवहन पक्ष) की ग्रिधमूचना संस्था साठ काठ निठ 304(ई), दिनांक 31 मार्च, 1979 में निम्नांविखत संसोधन करती है, ग्रथांत:——

उन्त प्रधिसूचना में कम सं० 14 के बाद निम्नलिखन कम संख्या भौर प्रविध्टि रखी जाए, भर्थात्:—

"15. श्री बयालार रिव, संसद संदस्य—पत्सन में कार्यरत श्रमिकों के प्रतिनिधि।"

> [फाईल सं०पीटी बी-42/78] विनेश कुमार जैन, संयुक्त सचित्र

G.S.R. 510(E).—In exercise of the powers conferred by subclause (i) of clause (c) of sub-section (1) of section 3 of the Major Port Trusts Act, 1963 (38 of 1963), read with sub-section (6) of the said section, the Central Government hereby appoint Shri Vayalar Ravi, M.P., as trustee, representing the labour employed in the Port of Cochin, on the Board of Trustees of the Port of Cochin, and makes the following amendment in the notification of the Government of India in the Ministry of Shipping and Transport (Transport Wingh) No. G.S.R. 304(E), dated the 31st March, 1979, namely :—

In the said notification, after Serial Number 14, the following Serial Number and entry shall be inserted, namely:—

"15. Shri Vayalar Ravi, M.P.—Representing the labour employed in the Port".

[F. No. PTB-42/78]D. K. JAIN, Joint Secy.